

DR. HARIHAR KRIPALU TRIPATHI

Dr. Harihar Kripalu Tripathi is the Principal of the Shri Maharathi Sanskrit Mahavidyalaya, Kurhans, Kothiya, Azam Garh-(U.P.) for last 33 years and engaged in the pioneer educational activities for basic learners as well as scholars of higher education in Sanskrit studies. Dr. Tripathi was the Chairman (Adhyachha) of Trust (Nyas Parishad) of World fame Temple "Shri Kashi Vishwanath Mandir" Varanasi from year 2009 to 2012 and he was also the Member of same trust from year 2006 to 2009.

2. Born on April 26, 1956, Dr. Tripathi received the Master Degree (Acharya) from the Sampurnanand Sanskrit Vishwavidyalaya, Varanasi in 1979. He was awarded the"Vidyavaridhi" (Ph.D.) degree from same University on the very specific topic “Balmanormagarbhit- Tatvabodhinee – Laghushabdendushekharyostulnatmakadhyayanam” in 1989. Observing the importance and utility of his Ph.D. thesis for students of oriental studies in general and researchers in particulars, the Publication Institute of Sampumanand Sanskrit Vishwavidyalaya, Varanasi published his thesis as book which is one among the best seller books for Sanskrit studies. This work is an original and authentic contribution of Dr. Tripathi to the field of Sanskrit studies.

3. Dr. Tripathi established a magnificent temple of "Maa Ashtadashbhuja Devi" in Patiya-Varanasi to make beneficiary by connecting the people with "Dharma" in the right way of humanities. Dr. Tripathi is widely recognized across the society for his specific role of public welfare by spiritual and moral education. He is widely known as spiritual header and moral preacher and in public domain he is known by the name of "Guru Ji".

4. Dr. Tripathi has been publishing the "Viraat" magazine in fields of spirituality and philosophies of ancient shastras for last 15 years. He is fully devoted to guide and educate the scholars of different discipline of Sanskrit language with his expertise.

5. Dr. Tripathi is the recipient of numerous awards and honours. He has been conferred honorary degree of "Mahamahopadhyay" for his Par excellence in Indian learning by Lal Bahadur Shastri Rashtriya Sanskrit Vidyapeeth (Deemed University), New Delhi in 2002. He received the "Brahmarshi" title by "Akhil Bhartiya Sadhu Samaj evam Devaraha Baba Sant Mandal" in 2004. He has also been honoured as "AdhyapakRatna" by Sri Rajnath Singh, Ex.C.M. of U.P. in Children Academy Society,Azamgarh-UP, "Syryamani" degree by "Manvadhikar sanrachhan Evam Madak Dravya Anveshan Bureau in 2009, he has been honoured as "Jyotish Martand" in International "Jyotirvigyan" Conference organized by "Vishwa Kalyan Evam Jyotish Shodh Sansthan". The "Kashi Sapoot" honour was conferred by "Yuva Sanskritik Jaerukta Samiti" and "Murli Manohar Joshi Mitra Mandali" in 2011, the "Rashtra Gaurav" honour by "Soch Hum Sabaki" magazine group. Dr. Tripathi presided over the many national and international seminars, workshops and conferences.



डॉ. हरिहर कृपालु त्रिपाठी

डॉ. हरिहर कृपालु त्रिपाठी पिछले 33 वर्षों से श्री महारथी संस्कृत महाविद्यालय, कुरहंस, कोठिया, आजमगढ़ (उत्तर प्रदेश) के प्राचार्य हैं और आप संस्कृत अध्ययन के क्षेत्र में प्रथमा के छात्रों (बेसिक लर्नर्स) और उच्चतर शिक्षा के विद्यार्थियों हेतु शैक्षिक गतिविधियों का मार्ग-प्रशस्त करने में जुटे हुए हैं; आप वर्ष 2009 से 2012 तक बनारस के विश्व प्रसिद्ध मंदिर "श्री काशी विश्वनाथ मंदिर" की न्यास परिषद के अध्यक्ष रह चुके हैं तथा आप इसी न्यास-परिषद के 2006 से 2009 तक सदस्य भी रहे हैं।

2. आपका जन्म 26 अप्रैल, 1956 को हुआ और आपने वर्ष 1979 में संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय से आचार्य की उपाधि प्राप्त की। वर्ष 1989 में आपको इसी विश्वविद्यालय से एक खास विषय "बालमनोरमागर्भित तत्वबोधिनी लघुशब्देन्दुशेखर्योस्तुलनात्मक अध्ययनम्" पर 'विद्यावृद्धि" (पी.एच.डी) की डिग्री प्रदान की गई। सामान्यतया प्राच्य विद्या के विद्यार्थियों हेतु और खासतौर पर शोधकर्ताओं हेतु आपकी पीएचडी के शोध-प्रबंध की महत्ता और उपयोगिता को देखते हुए संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के प्रकाशन संस्थान ने आपके शोध प्रबंध को एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया जो संस्कृत अध्ययन के लिए सर्वाधिक बिकने वाली पुस्तकों में से एक है। संस्कृत अध्ययन के क्षेत्र में आपका यह कार्य एक अभूतपूर्व और प्रामाणिक योगदान है।

3. आपने पटिया-वाराणसी में "मां अष्टदशभुजा देवी" का एक भव्य मंदिर स्थापित किया ताकि मानवता के सही मार्ग "धर्म" से लोगों को जोड़कर श्रृद्धालु तैयार किये जा सकें। आपको आध्यात्मिक और नैतिक शिक्षा के द्वारा जन कल्याण की विशेष भूमिका के लिए पूरे समाज में व्यापक रूप से जाना जाता है। आपको आध्यात्मिक अग्रदीप और नैतिक धर्मोपदेशक के रूप में व्यापक ख्याति प्राप्त है और लोक-जनक्षेत्र में आपको "गुरूजी" के नाम से जाना जाता है।

4. आप पिछले 15 वर्षों से आध्यात्मिक और प्राचीन शास्त्र दर्शन के क्षेत्रों में "विराट" पत्रिका का प्रकाशन कर रहे हैं। आप अपनी प्रवीणता से संस्कृत भाषा के विभिन्न विधाओं के विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करने और उन्हें शिक्षित करने हेतु पूर्णत: समर्पित हैं।

5. आप बहुत सारे अवार्ड और सम्मान प्राप्त करने वाली विभूति हैं। भारतीय शिक्षा में आपकी सर्वोत्कृष्टता हेतु आपको लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ (डीम्ड विश्वविद्यालय) नई दिल्ली द्वारा 2002 में "महामहोपाध्याय" की मानद उपाधि प्रदान की गई। वर्ष 2004 में आपको "अखिल भारतीय साधु समाज एवं देवराहा बाबा संत मंडल" द्वारा "ब्रह्मऋषि" की उपाधि से नवाज़ा गया है। आपको श्री राजनाथ सिंह जी, पूर्व-मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश द्वारा चिल्ड्रेन एकेडमी सोसाइटी, आजमगढ़, उत्तर प्रदेश में "अध्यापक रत्न" से, 2009 में "मानवाधिकार संरक्षण एवं मादक द्रव्य अन्वेषण ब्यूरो" द्वारा "श्रीमणि" उपाधि से और "विश्व कल्याण एवं ज्योतिष शोध संस्थान" द्वारा आयोजित अंतरराष्ट्रीय "ज्योतिर्विज्ञान" सम्मेलन में "ज्योतिष मार्तण्ड" के रूप में सम्मानित किया गया है। वर्ष 2011 में "युवा सांस्कृतिक जागरूकता समिति" और "मुरली मनोहर जोशी मित्र मंडली" द्वारा "काशी सपूत" सम्मान और "सोच हम सबकी" पत्रिका समूह द्वारा "राष्ट्र गौरव" सम्मान प्रदान किया गया। आपने बहुत सी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय विचार-गोष्ठियों, कार्यशालाओं और सम्मेलनों की अध्यक्षता भी की है।